फिरकी बच्चों की
Firkee Bachchon Ki
वर्ष 1 अंक 2 दिसंबर 2019
अर्द्धवार्षिक पत्रिका
चित्र— तपोषी घोषाल
फिरकी 1
बच्चों की

गुब्बारे

मुझे गुब्बारा पसंद है। मैं रोज़ गुब्बारे से खेलती हूँ। मैं जब भी गुब्बारा फुलाती हूँ तो उसे मच्छर फोड़ देते हैं। मेरे दोस्त जब मेरे घर आते हैं तो हम गुब्बारे से खेलते हैं। मेरे पापा जब काम से वापस आते हैं तो मेरे लिए गुब्बारे लाते हैं। मेरे घर के पास एक दुकान है। मैं हर रोज़ दुकान जाकर गुब्बारे खरीदती हूँ।

दिव्यांगना झा
कक्षा 3
केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, भोपाल

चित्रांकन— राधे श्याम

इस अंक में

एक
छिप
छिप
छिप
कर चली
छिप
छिप कर चली
पास आकर देखा तो

छिप कर चली

माही सिंह
कक्षा 3
डीएमएस, भोपाल
चित्रांकन— बंदना भौमिक
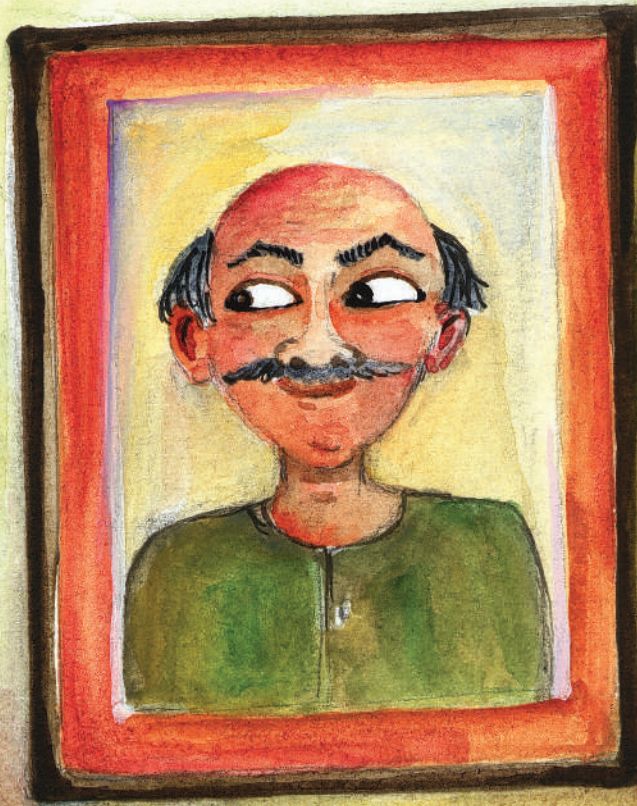
छिप छिप कर चली

छिप छिप कर चली

वो निकली छिपकली

छींक

छींक एक जैसी नहीं होती। छींक अपने आप बाहर आ जाती है। धूप को देखो तो छींक आएगी! कभी-कभी खाना खाते समय भी छींक आ जाती है। पानी पीते-पीते भी छींक आ जाती है! हम भी छींकें, तुम भी छींको—आssssछीं! पता है, जानवर भी छींकते हैं!

हाथी भी छींकता है— हाssssछीं!

गिलहरी भी छींकती है— गीssssछीं!

बकरी भी छींकती है— बssssछीं!

भास्कर दुर्गा
कक्षा 4
उड़िया समाज सेवा समिति
अनौपचारिक स्कूल, भोपाल

चित्रांकन— हीरा धुर्वे

कौन खाएगा पतली रोटी,

कौन खाएगा छोटी रोटी,

रोटी

यश खाएगा पतली रोटी,

आशी खाएगी छोटी रोटी,

और... मैं खाऊँगी मोटी रोटी।

हिमांशी
कक्षा 4
डीएमएस, भोपाल
चित्रांकन— वृषाली जोशी
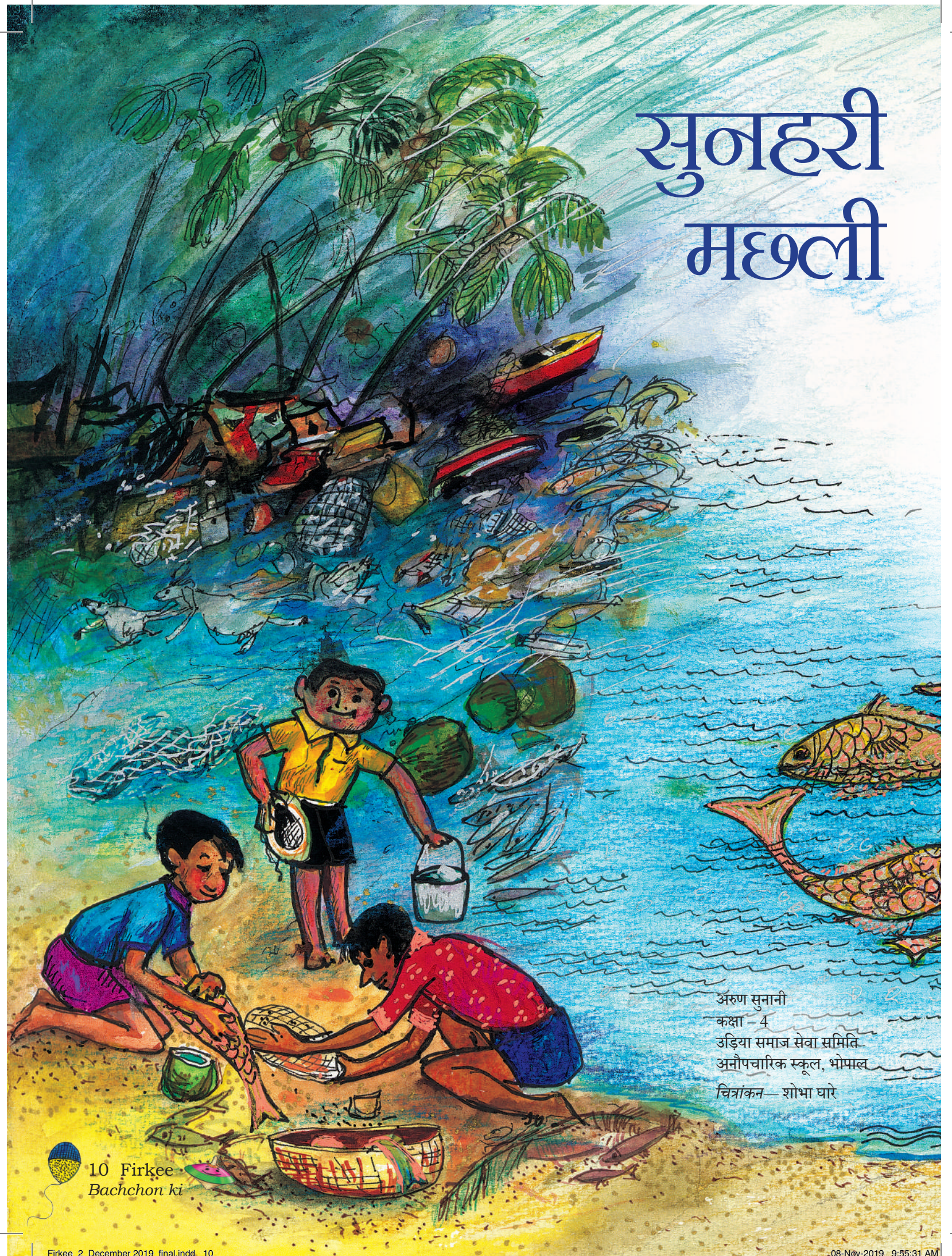
सुनहरी मछली

अरुण सुनानी
कक्षा – 4
उड़िया समाज सेवा समिति
अनौपचारिक स्कूल, भोपाल
चित्रांकन— शोभा घारे

एक बार बहुत तेज़ तूफ़ान आया। कुछ मछलियाँ छिटककर पानी से बाहर किनारे पर आ गईं। सुनहरी मछली भी किनारे आ गई। कुछ मछलियों को बच्चों ने पकड़ लिया। बच्चों ने मछलियों को बड़े अच्छे से रखा। बच्चे मछलियों को खाना देते और उनके पास ही सोते। सुनहरी मछली रोज़ सोचती है— मेरे दोस्त, भाई-बहन कैसे होंगे? यह सोचकर वह दुखी हो जाती थी। मछली के माता-पिता भी सोचते थे— मेरी बेटी कैसी होगी? एक दिन सारे बच्चे नदी के पास गए। बच्चों ने सभी मछलियों को नदी में छोड़ दिया। मछलियों को नई ज़िंदगी मिली। बच्चे रोज़ मछलियों से मिलने आते थे। बच्चे मछली को देखकर बहुत खुश हो जाते थे।
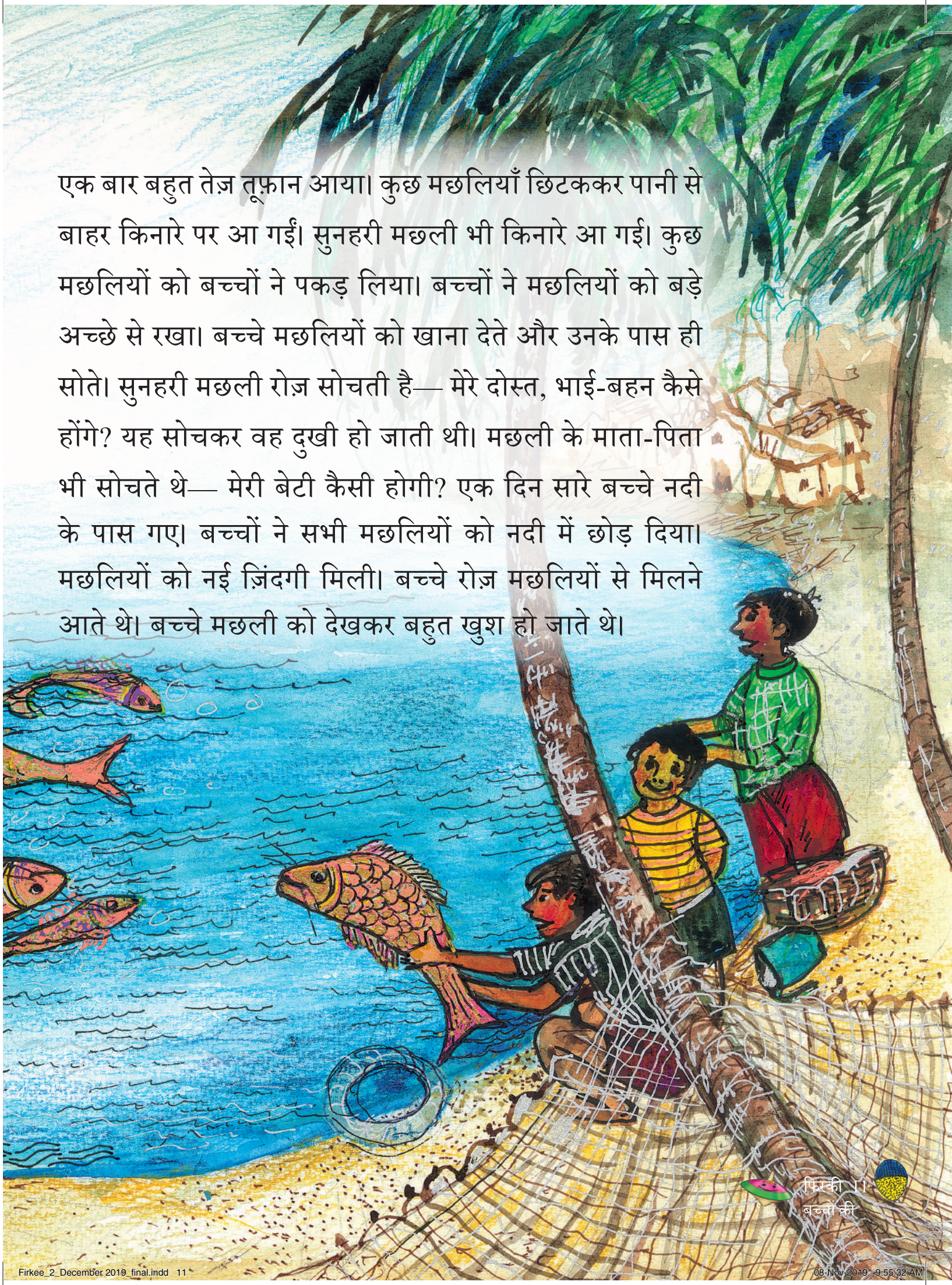
बीचों-बीच
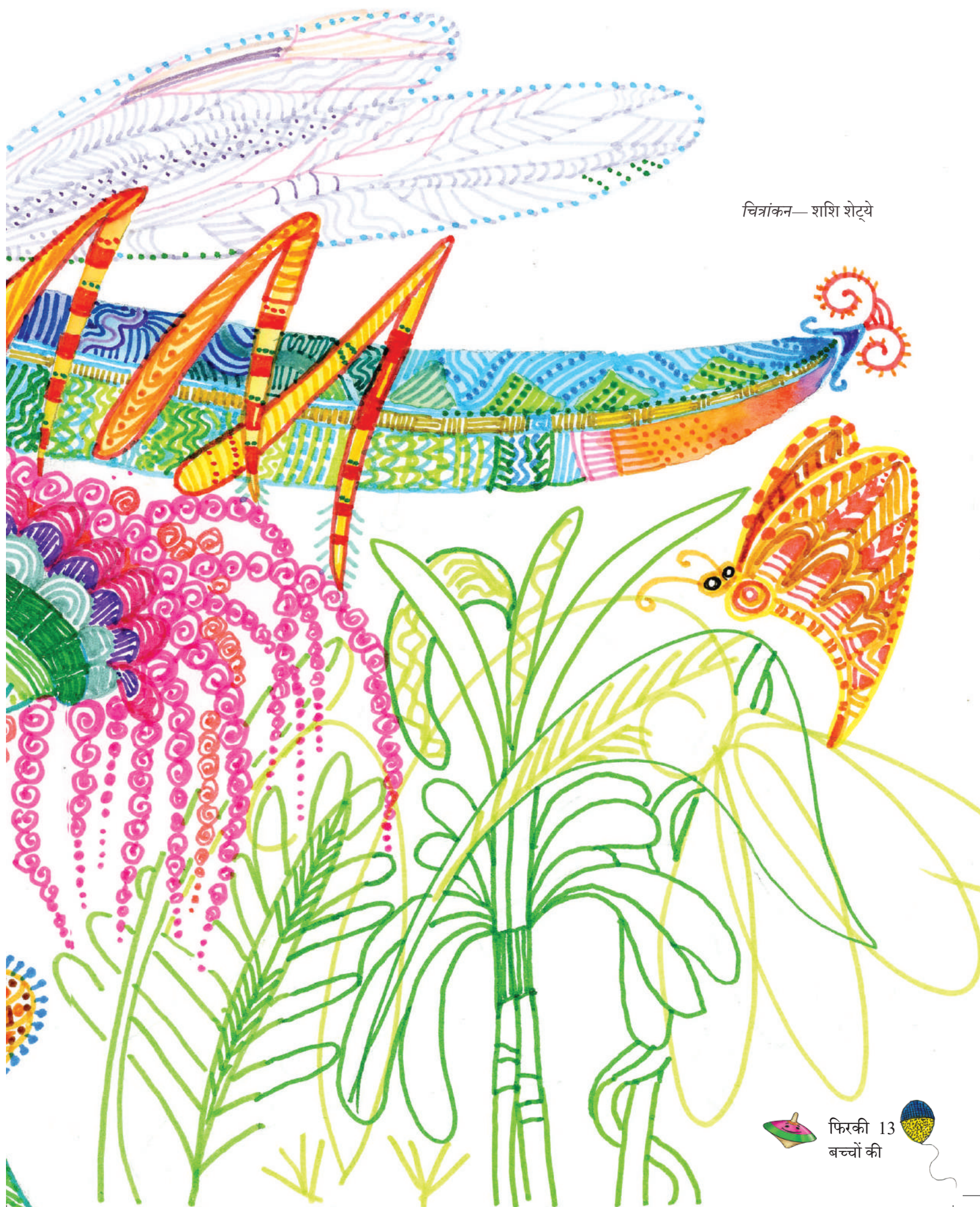
चित्रांकन— शशि शेट्ये
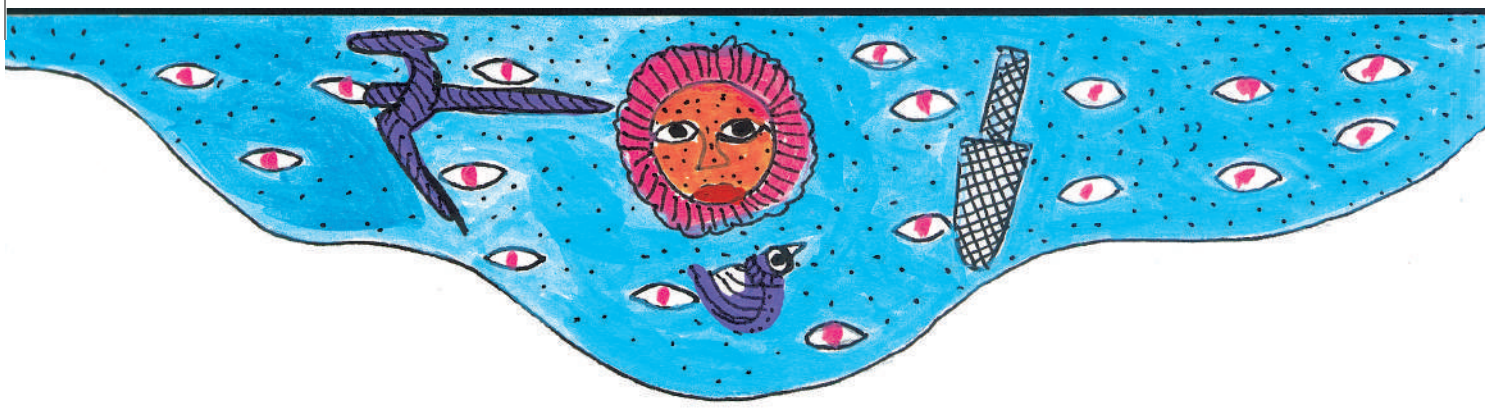
बाँसुरी

एक था बाँसुरी वाला। वह रोज़ गाँववासियों को बाँसुरी की धुन सुनाता था। एक दिन वह बाँसुरी बजा रहा था। सारे गाँववासी उसके पास आ गए। वह बाँसुरी इतनी अच्छी
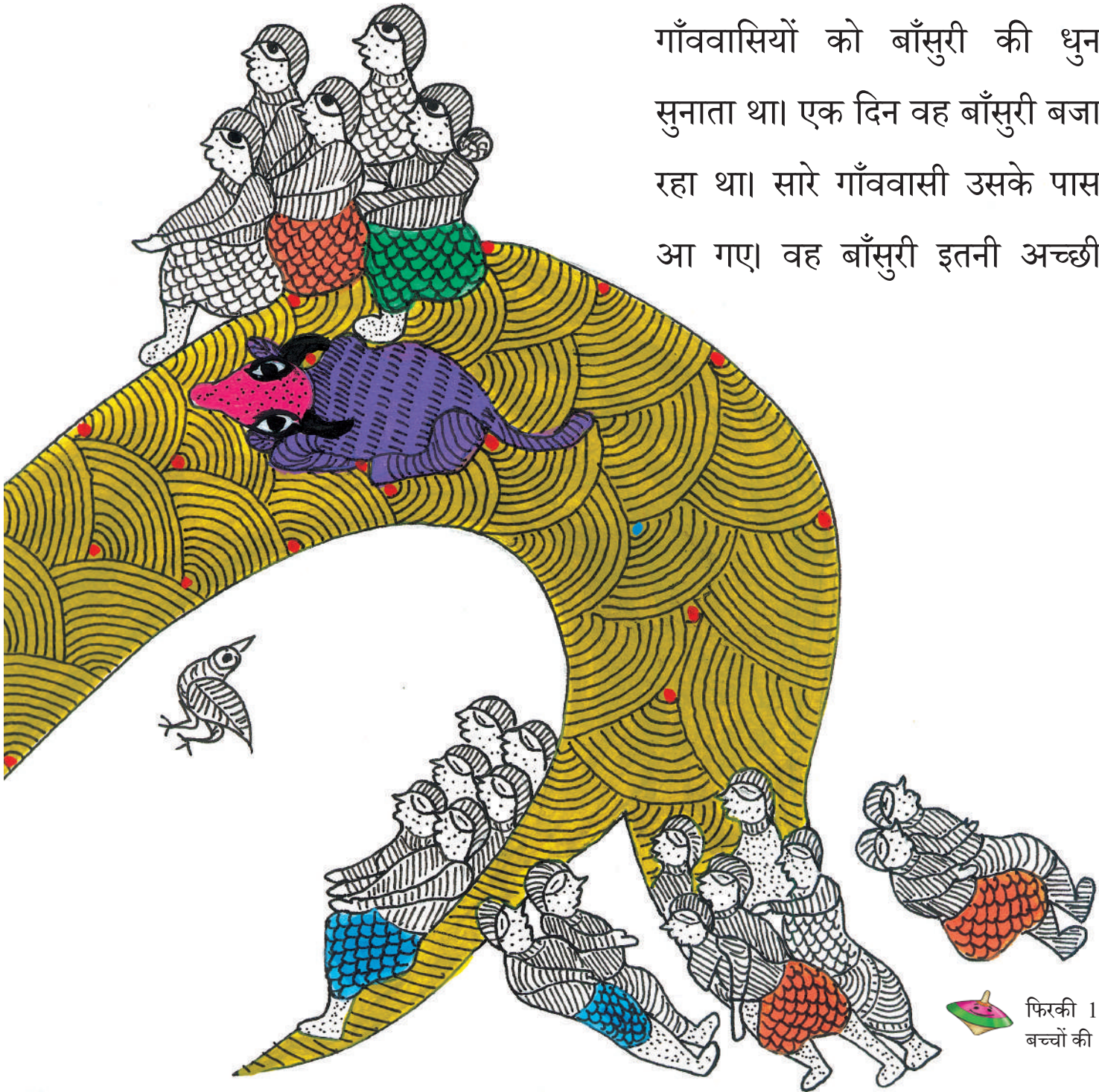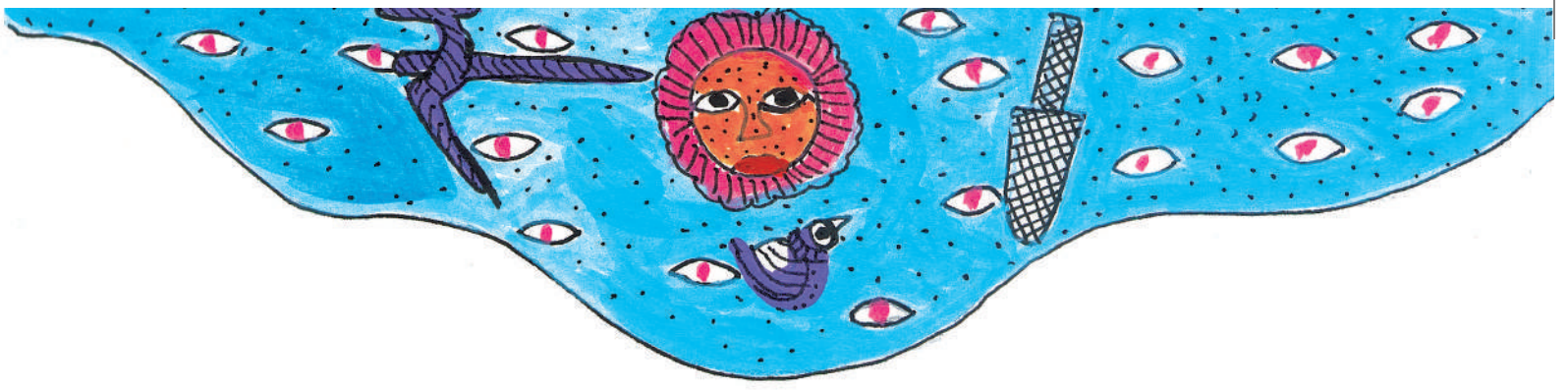
बजा रहा था कि सारे गाँववासी वहीं सो गए। फिर जब सुबह हुई तो उन्होंने सोचा कि अरे, हम यहाँ क्या कर रहे हैं!

कार्तिक देशमुख
कक्षा 3
केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, भोपाल

चित्रांकन— सुभाष व्याम

प्यारी बहन

कैसी हो प्यारी बहन? आशा है कि तुम ठीक होंगी? मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। जब-जब तुम नहीं होती हो तो मुझे अच्छा नहीं लगता। पता है, मेरे पास रोज़ एक तोता आता है। एक दिन उसने मुझे बहन कहकर पुकारा तो मुझे तुम्हारी याद आ गई। अच्छा, अब मैं अपनी कहानी बंद करती हूँ। मेरी कहानी याद रखना, प्यारी बहन!

प्राप्ति मिश्रा
कक्षा 3
डीएमएस,भोपाल

चित्रांकन—कनुप्रिया

Ant Hill

When I see an Ant Hill, I put my hand in the Ant Hill. A small ant bit my finger very hard. I cried very loud. I saw a lizard. It was like a monster. When I reached my home, I saw my favourite cap that

got lost three days ago. I am so happy. I forgot my finger that hurt so bad.

Samiksha Yadav
Class V
Kendriya Vidhyalaya No.1, Bhopal

Illustration— Heera Dhurve

एक जंगल में खरगोश का परिवार रहता था। परिवार में दो बच्चे थे। उनकी दोस्ती एक गधे से थी। वे साथ में खूब खेलत। एक दिन वे खेलते-खेलते जंगल से दूर चले गए।
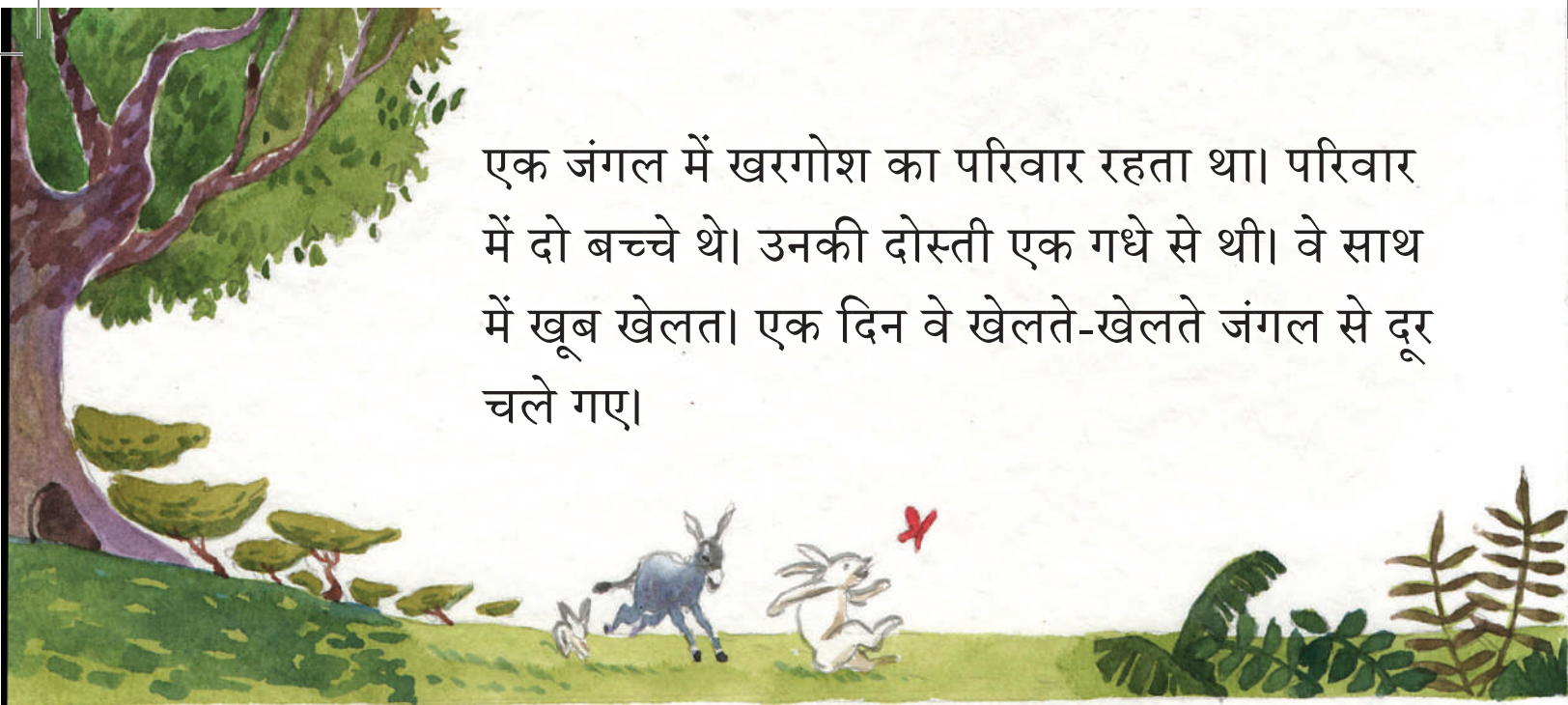
उसी दिन शिकारी जंगल में आ गए थे। शिकारी जंगल के राजा और सारे जानवरों को पकड़कर ले गए। खरगोश के बच्चे और गधा खेलकर वापिस आए तो जंगल में कोई नहीं था। सिर्फ़ एक चिड़िया बच गई थी।

चिड़िया ने कहा— भाई, शिकारी लोग सबको पकड़कर ले गए। यह सुनकर खरगोश के बच्चे रोने लगे। गधे और चिड़िया ने उनसे कहा— रोओ मत, हम तुम्हारे साथ हैं। वे सभी मिलकर जानवरों को ढूँढ़ने निकल पड़े।

अजय बाघ
कक्षा 3
उड़िया समाज सेवा समिति
अनौपचारिक स्कूल, भोपाल

चित्रांकन— हबीब अली
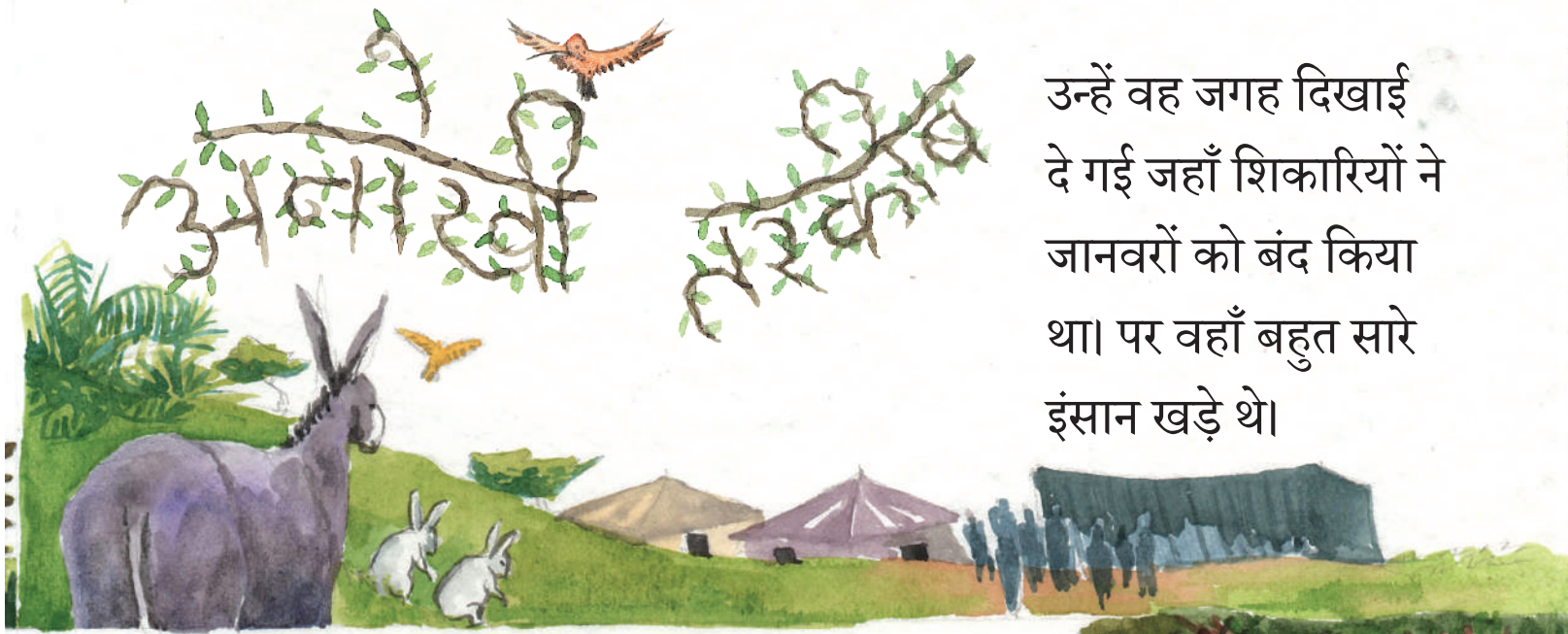
उन्हें वह जगह दिखाई दे गई जहाँ शिकारियों ने जानवरों को बंद किया था। पर वहाँ बहुत सारे इंसान खड़े थे।

गधे को एक तरकीब सूझी। गधा शेर की तरह दहाड़ा। सब इंसान डरकर भाग गए। पर जानवर ताले में बंद थे!
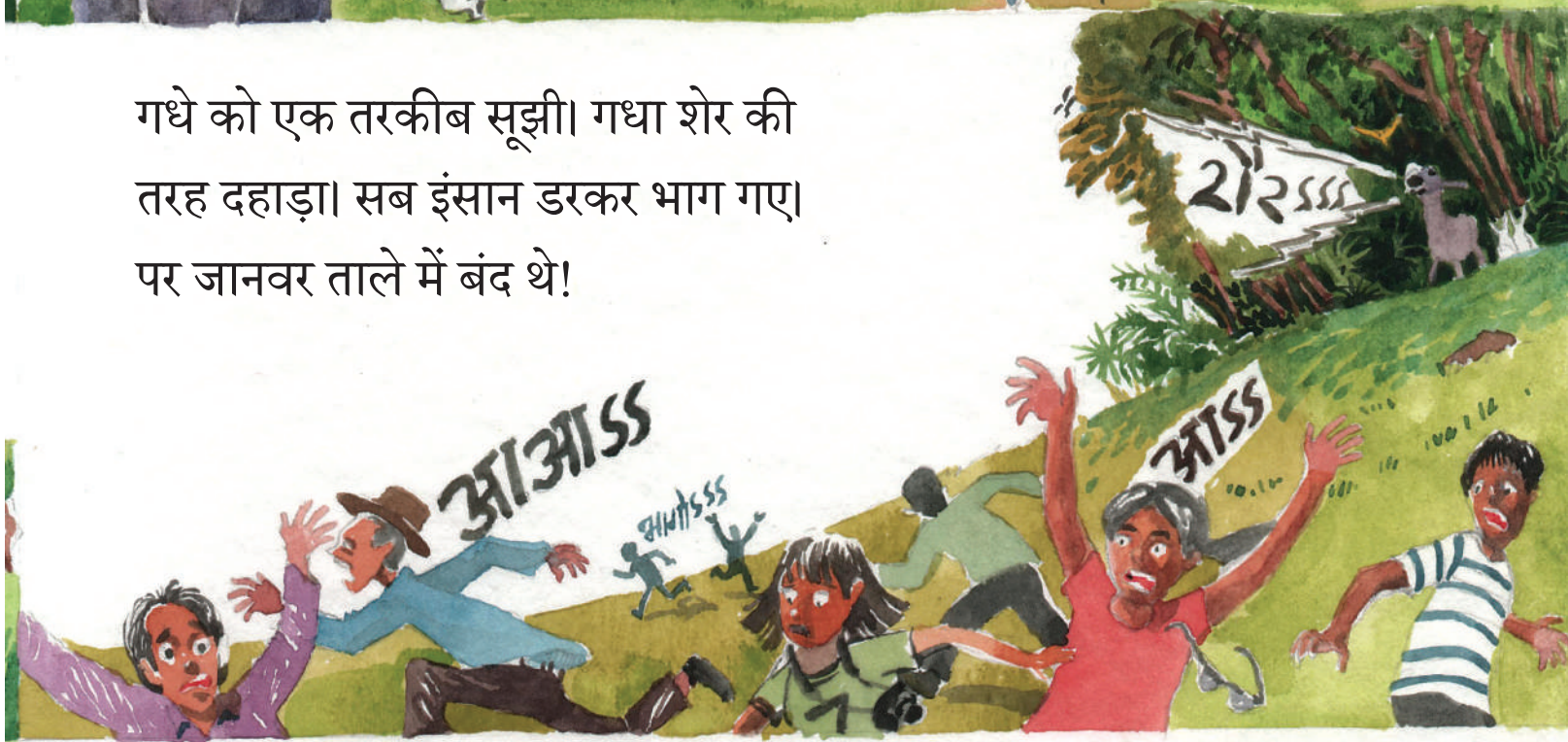
तब चिड़िया बोली— अब मेरी तरकीब देखो! चिड़िया एक तिनका लाई और ताले को खोल दिया। सारे जानवर जंगल वापस लौट गए।
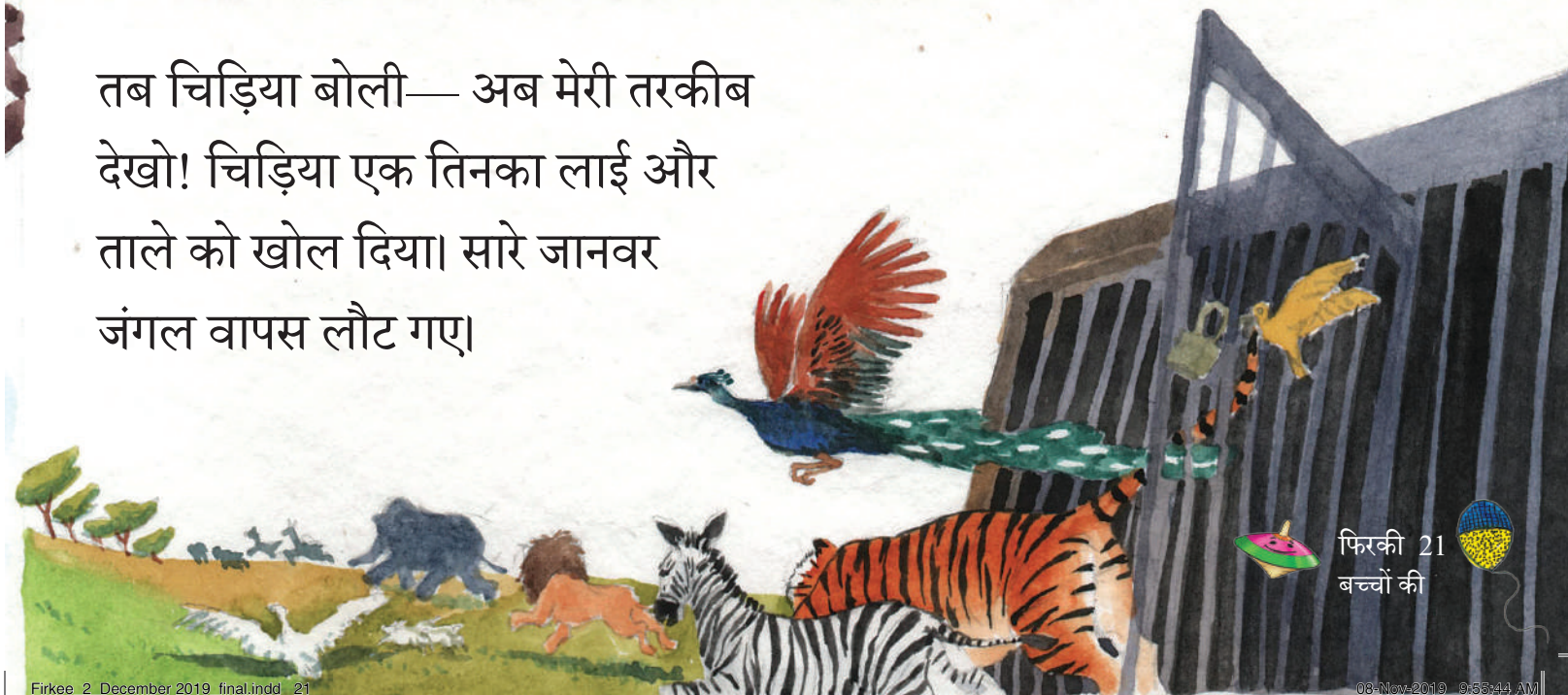
खिड़की

हर घर में खिड़की होती है। खिड़की हमें हवा देती है और रोशनी भी देती है। खिड़की एक तरह की नदी होती है। जिसमें से हवा बहती है। खिड़कियाँ अलग-अलग तरह की होती हैं। हमारे घर की खिड़की से मंदिर और बरगद का पेड़ दिखते हैं। सब बच्चे मंदिर के आँगन में खेलते हैं। शहर की खिड़कियाँ बड़ी-बड़ी होती हैं।
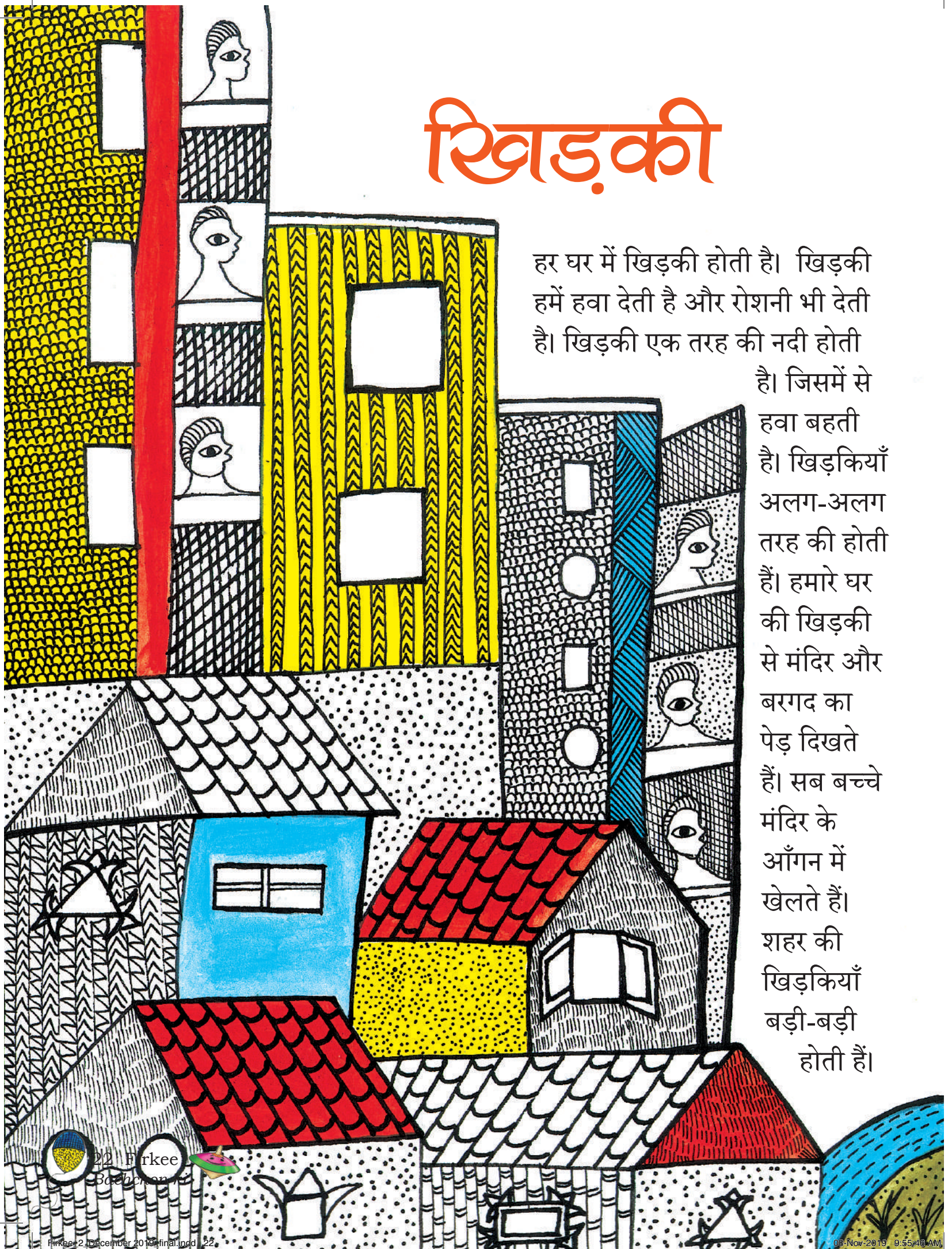
गगन
कक्षा 3
उड़िया समाज सेवा समिति
अनौपचारिक स्कूल, भोपाल

चित्रांकन— मान सिंह व्याम

देखो, मैंने क्या बनाया!

चेतना मनवर— कक्षा 3 डीएमएस, भोपाल

भूमिका अहीरवार— कक्षा 5 केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, भोपाल

तारा टाकरी— कक्षा 3, उड़िया समाज सेवा समिति अनौपचारिक स्कूल, भोपाल

इबाद खान— कक्षा 5, डीएमएस, भोपाल

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: अनूप कुमार राजपूत
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: बिबाष कुमार दास
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकारा
उत्पादन सहायक	: प्रकाश वीर सिंह

संपादन मंडल

मूल संकल्पना	रीडिंग डेवलपमेंट सेल
शैक्षणिक संपादक	उषा शर्मा
संपादन मंडल	कीर्ति कपूर ज्योत्स्ना तिवारी मीनाक्षी खार श्वेता उप्पल संध्या सिंह सोनिका कौशिक
सहयोग	मीनाक्षी वर्षा सिंघल
साज-सज्जा	राजेश हांडा, डिजिटल एक्सप्रेशन

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें—

शैक्षणिक संपादक
समग्र शाला भाषा कार्यक्रम
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग,
नयी दिल्ली 110016
दूरभाष— 011-26592293
ईमेल- earlyliteracy.ncert@gmail.com

PD 10T SU

100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से अनूप कुमार राजपूत, अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग, डॉ. बी.आर. अंबेडकर खंड, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, बी- 3/1 ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-II , नयी दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

संपादक— उषा शर्मा

Registration no. DELBIL/2019.77753

₹ 35.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING